क्रोड्य नरका. करोड, [असंख्य वार] क्रोध्या दशस्कं(२). कोप्या क्रोश कादं(शा). वे माइल[त्रण किलो-मिटर]नुं अंतर (सं.) क्लीव अखाका. नपुंसक (सं.) क्लीव विराप. [नपुंसक, पावैयो] (सं.क्लीव)

क्षा यडाबा. क्षय, नाश
क्षण नलरा. पर्वदिवसनी कथा के व्याख्यान (सं.)
क्षणदा कादं(शा). सित्र (सं.)
क्षण, क्षणं मदमो. क्षण पण, जरा पण

(सं.क्षण+खलु) **क्षणुक्षणुए** दशस्कं(१). क्षणेक्षणे, थोडीथोडी वारे

क्षत्रीनंदन प्रेमाका. क्षत्रियनो पुत्र क्षप षष्टिप्र. श्रम, [प्रयत्न] (सं.क्षप् परथी) क्षपइ षष्टिप्र. खपावे, दूर करे, [नाश करे] [सं.क्षप्]; जुओ क्षिपइ

क्षपकश्रेणि *आनंस्त*. मोहनीय कर्मनो क्षय करनारी गुणस्थाननी [आत्मावस्थानी] श्रेणी [जै.] [सं.]

स्रपणक कादं(शा). बौद्ध के जैन साधु (सं.) स्रिमें उक्तिर. क्षमा आपी [सं.क्षम्] स्रयकारणाहरु वाग्भवा. नाश करनार सरइ उक्तिर. वाग्भवा. झरे (सं.क्षरित) स्रात चतुचा. ख्याति सामोदरि ऋषिरा. कृशोदरी, [पेटनो भाग कृश होय तेवी स्त्री] [सं.]

क्षालण प्रबोप्र. धोनार (सं.क्षालन)

श्वालन प्रेमाका. प्रक्षालन, धोवुं ते [सं.] श्वि कादं(शा). क्षय, नाश श्विइ षडावा. क्षय पामे, नाश पामे (सं. क्षयति)

*श्वित्तित्र (कित्तिग?) तेरका. प्राचीसं. कृतिका नक्षत्र

क्षिपइ *उपवा. [-नो द्वास करे, नाश करे] [सं.क्षप्]; जुओ क्षपइ

श्तिमि वडावा. क्षमा आपो (सं.क्षम्) श्लीणमोह आनंस्त. ए नामनुं गुणस्थानक, जेमां मोहनीय कर्मनो क्षय थई गयो होय एवी आत्मावस्था [जै.] [सं.]

क्षीरहरो गुर्जरा. क्षीर सरोवर (सं.क्षीरहृद) क्षुद्र नलरा. छिद्र, दोष

क्षुभाय *आरारा*. क्षुड्य बने

क्षुभि *कादं(ध्र)*. आकळविकळ थाय [सं. क्षुभृ]

बुर अभिऊ. खरी (सं.क्षुरा)

सुरी कादं(शा). खरी, डाबलो (सं.)

क्षेत्र, क्षेत्र, खेत्र उपवा. प्रदेश, स्थान (सं.); *उक्तिर.* खेतर(सं.); नलरा. धन वापरवानुं स्थान (जै.)

क्षेद *नलरा.* खेद, क्लेश; जुओ खेद **क्षे-ले** अखाका. क्षय अने लय

क्षोणि तिल (क्षोणि तिल कीध) *लावल. [पृथ्वी तळे करी, कबजे करी]

क्षोभन वसंफा. वसंवि(ब्रा). क्षुड्य — व्याकल करनार (सं.)

क्षोभिवि उपवा. हलावी, चलित करी **क्षोहणी** दशस्कं(१). प्रेमाका. अक्षौहिणी,